This question paper contains 6 printed pages.

3422 *Your Roll No.* .....

L.L.B. / V Term. **B**

Paper XXI— JURISPRUDENCE - I (CONCEPTS)

(Old Course)

Time : 3 hours *Maximum Marks* : 100

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

NOTE:— *Answers may be written either in English or in Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.*

टिप्पणी:— *इस प्रश्नपत्र का उत्तर अंग्रेज़ी या हिन्दी किसी एक भाषा में दीजिए; लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।*

Attempt any five questions.
All questions carry equal marks.

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. Critically examine the following:

निम्न कथनों का समीक्षात्मक विश्लेषण कीजिए :

(*a*) "The assumption that only rights principles are enforceable seems to be an unsupportable dogma."

P. T. O.

"यह उपधारणा कि अधिकारिक सिद्धान्त ही प्रवर्तित किए जा सकते हैं एक निराधार सिद्धान्त है।"

(*b*) "A unique feature of rights is that the right holder may either invoke or not invoke or waive his rights."

"अधिकार की अनन्य विशिष्टता यह है कि या तो अधिकार-धारक अपने अधिकारों का अवलम्ब ले सकता है अथवा अपने अधिकारों का अधित्यजन कर सकता है।"

(*c*) "The difficulty is this. If some non-person has rights and if it is possible for us to respect these rights then respecting rights can itself entail ..... showing respect for persons as persons."

"समस्या यह है कि यदि कोई गैर-व्यक्ति अधिकारों का धारक है तो उसके अधिकारों का सम्मान करना यह दर्शाता है कि ..... यह सम्मान व्यक्तियों के प्रति 'व्यक्ति' के रूप में हो रहा है।"

(*d*) "Even if the utility trumping feature were necessary for principle to be a right principle, it hardly seems sufficient."

"धारक अधिकारी के संबंध में यदि एक विशिष्ट युक्ति के रूप में उपयोगिता का सिद्धान्त एक अवश्यक सिद्धान्त है, यह कथन अपूर्ण है।" 5×4=20

2. Critically examine the assumption underlying any two theories of corporate personality. Do you think theories of legal personality had played an important

role in past but are not as relevant for future? Give reasons for your answer.

समष्टि व्यक्तित्व से संबंधित दो उपधारणाओं का समीक्षात्मक विश्लेषण कीजिए। क्या यह कहना उचित है कि विधिक व्यक्तित्व से संबंधित सिद्धान्तों ने भूतकाल में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परन्तु वर्तमान में इन सिद्धान्तों का महत्त्व नही है। कारण सहित उत्तर दीजिए। 20

3. "There is no one feminist theory to law that can completely discuss the complex and multiple oppressions and exploitations in the legal regulations on women." Critically comment on the statement.

"विधि में नारी-अधिकारवादी कोई भी ऐसा सिद्धान्त नहीं है जिसके अन्तर्गत नारी पर होने वाले जटिल और बहुल शोषण और उत्पीड़न पर विधि नियमन पर पूर्ण रूप से विचार हो सके।" इस कथन का समीक्षात्मक विश्लेषण कीजिए। 20

4. Write a detailed and critical essay with relevant diagrams on the contribution of Hohfeld to the science of law and jurisprudence.

आरेखों के साथ विधि-विज्ञान एवं विधिशास्त्र के संबंध में हाफेल्ड के योगदान पर एक विस्तृत समीक्षात्मक निबंध लिखिए। 20

5. (*a*) "In a bourgeois society, man is a 'profane' object capable of being bought and sold, whereas the formal person is sacred."

"एक मध्यवर्गी समाज में सांसारिक व्यक्ति क्रय-विक्रय की वस्तु हो सकती है, परन्तु एक औपचारिक व्यक्ति पवित्र है।"

(*b*) " A reading of Marx suggests that he did not intend to reject the modern concept of rights altogether and his attitude to it was subtle and discriminating."

"मार्क्स (Marx) का अध्ययन यह दर्शाता है कि अधिकार के आधुनिक सिद्धान्त को उन्होंने पूर्ण रूप से अस्वीकार नहीं किया परन्तु उनके विचार इस संदर्भ में सूक्ष्म रूप से विभेदकारी थे।"

Discuss these observations of Prof. Bhikhu Parekh critically.

प्रो० भीखू पारिख के उपरोक्त कथन की समीक्षात्मक आलोचना कीजिए। 20

6. Examine the importance of '*Actus reus*' and '*Mens rea*' in criminal liability as well as the concept of strict liability. Discuss the socio-economic factors for creating criminal liability without '*mens rea*'.

आपराधिक दायित्व में कार्य (*Actus reus*) और दुराशय के महत्त्व तथा साथ ही साथ कठोर दायित्व की संकल्पना का परीक्षण कीजिए। दुराशय के अभाव में सामाजिक-आर्थिक कारक की आपराधिक दायित्व के निर्माण में विवेचना कीजिए। 20

7. Critically examine the following in the light of Upendra Baxi's article 'From Human Rights to the Right to be Human! Some Heresies':

   (*i*) Rights in capitalistic society become manifestations of politically protected power.

   (*ii*) One of the problems with classical and contemporary human rights thinking concerns the role of violence in negating as well as promoting human rights.

   उपेन्द्र बक्शी के लेख 'From Human Rights to the Right to be Human : Some Heresie' के संदर्भ में निम्न कथनों की समीक्षात्मक विवेचना कीजिए :

   (*i*) पूँजीवादी समाज में अधिकार एक राजनीतिज्ञ संरक्षित शक्ति के रूप में प्रव्यक्त रहते हैं।

   (*ii*) प्रतिष्ठित तथा सामयिक मानवाधिकारों की सोच की समस्याओं में से एक मानव अधिकारी के प्रवर्तन एवं खंडन में हिंसा के योगदान से संबंधित है। 20

8. Write critical short notes on any *two* of the following:

   (*a*) Possession in fact and possession in law

   (*b*) Distinguish between—

      (*i*) Power and Immunity

      (*ii*) Right and Privilege.

(c) Where would you place Articles 32 (1) and (2) of Indian Constitution in the 'Hohfeldian scheme' of Jural relations? Give reasons.

निम्न में से किन्हीं **दो** पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए :

(अ) तथ्यात्मक एवं विधिक कब्जा

(ब) भेद बताइये:—

(i) शक्ति एवं उन्मुक्ति

(ii) अधिकार एवं विशेषाधिकार।

(स) 'होफील्ड सारिणी' के विधिदार्शनिक संबंधों में आप भारतीय संविधान के अनुच्छेद 32 (1) व (2) को कहाँ स्थापित करेंगे? कारण दीजिए। 20